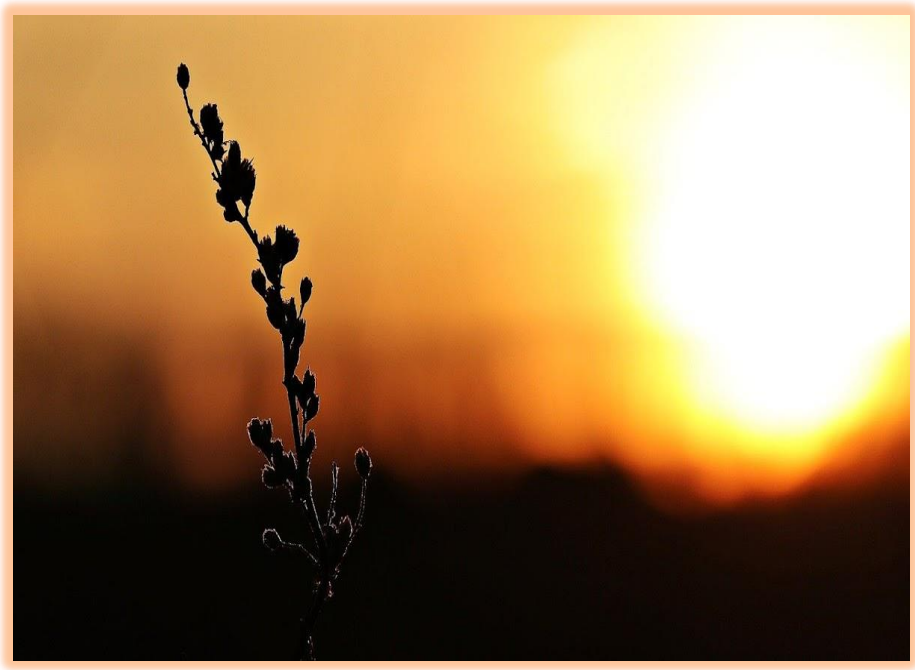

चित्रःगूगल से साभाए

स्वर्णिम-सूरज

भानु-भास्कर उदित हुए
धरती पर पसरा प्रकाश।
मयूख-मरीचि प्रभा फैली
अंधकार का हुआ नाश।

अंशुमाली आया धरती पर
हर एक दिशा महक गई।
देखकर स्वर्णिम-सूरज को
नन्ही चिड़िया चहक गई।

दूर शैल-शिखर के पीछे
अंशु-रशिम बिखर रही।
ऊंचे-ऊंचे तरु-पादप पर
ध्रुव तारे सम चमक रही।

गृह- निकेतन जाग उठे
बच्चों की किलकारी गूंजी।
खूंटे पर बंधी श्यामा भी
सानी-पानी को रंभा उठी।

कृषक ने उठाया कुदाल
खेतों की ओर चल पड़ा।
अम्मा ने संभाली रसोई
चूल्हा धू-धू जल उठा।

तटिनी, तालाब, पुष्कर
सब रजत सम चमक रहे।
झिलमिलाते हुए जल में
रवि का अक्स देख रहे।

हरित भू पर कनक किरणें
जादू सा धरती पर बिखरा।
अनुशासन में बंधी प्रकृति
हर मुखड़ा निखरा-निखरा।

डॉ.निशा नंदिनी भारतीय
तिनसुकिया,असम